मीडिया का राष्ट्रवाद और हाशिये का समाज

डॉ. मधु लोमेश
अदिति महाविद्यालय
दिल्ली विश्वविद्यालय

मीडिया और राष्ट्रवाद शब्द आधुनिक अर्थों में अतिव्यापक है।आज मीडिया अपने भीतर बहुत सी संस्थाओं विचारधाराओं और व्यक्तियों का संजाल स्वरूप है जिसकी अपनी सैद्धांतिकी है। प्रत्येक समाज में इसको अवधारणा अलग अलग कोणों से निर्धारित होती है, परिवर्तित होती रहती है। मीडिया की साख अपेक्षित है क्योंकि इससे जनविश्वास जुड़ा है। वर्तमान समय में रिपोर्टिंग के कई खतरे हैं राष्ट्रहित राष्ट्रविरोधी होने की अनुशंसा उसे आज महत्वपूर्ण या महत्वहीन बना सकती है। आजकल पत्रकारों को भी राष्ट्र विरोधी पत्रकार, राष्ट्र प्रेमी पत्रकार कह कर रेखांकित किया जाने लगा है। एक जिम्मेदार संस्था का पर्याय होने के नाते मुख्य धारा की मीडिया आज निशाने पर है, ऊहापोह की स्थिति से युक्त है।

राज्य शब्द से विस्तार प्राप्त शब्द 'राष्ट्र' अपनी भौगोलिक सीमाओं के भीतर समान संस्कृति, समान भाषा, समान जातीयता और समान ऐतिहासिक महत्व वाली जनता की अस्मिता का पर्याय है जो निरंतर विविधताओं चुनौतियों से संघर्ष करते हुए राष्ट्रीय संप्रभुता के लिए प्रतिबद्ध रहता है। संचार क्रांति और भूमंडलीय व्यवस्था ने राष्ट्र की अवधारणा को बदल दिया। सीमाओं का अतिक्रमण हुआ, भाषा-संस्कृति, विचारधाराओं पर किसी एक राष्ट्र का प्रभुत्व न रहा। अपने प्रतीकात्मक परंपरागत अर्थ से भिन्न राष्ट्र नए संदर्भों से युक्त हुआ। संकीर्ण अर्थ से अलग ' राष्ट्र ' आज व्यापक सोच से युक्त है जो साकार राष्ट्र की प्रतीति नही कराता। 'भूमंडलीय प्रवाह में बहते हुए दुनिया का भविष्य राष्ट्र आधारित लोकतंत्रों में निहित न होकर किसी 'ग्लोबल गवर्नेंस' और 'ग्लोबल डेमोक्रेसी' की शीर्ष संरचना में निहित हो गया है जो अधिकांशत: अमेरिकी वर्चस्व से प्रभावित है। "पिछले दशकों में जिस साकार राष्ट्र की रचना भारतीयों के समूहिक उद्धयम का पर्याय थी आज भूमंडलीय संस्कृति के बुलडोजर तले गुजरने को विवश है। आधुनिकता की आड़ में सभ्यता, संस्कृति, विचारधारा और राजनीति जटिल ग्लोबल समीकरणों के दबाव से युक्त है।'

पश्चिमी देशों की मजबूत आर्थिक व्यवस्था के समक्ष नतमस्तक पिछड़े देशों की मानसिकता उनका अंधानुकरण करने की है। अल्पविकसित, अविकसित देशों में राजनीतिक,आर्थिक,सामाजिक एवं सांस्कृतिक नियंत्रण जैसे कार्यों के लिए मीडिया साम्राज्य सुभीता साधन है। किसी भी युद्ध के अभाव में अपने साम्राज्य का विस्तार कर लेना, भूमंडलीय विस्तार, अपने लिए नए बाजारों की खोज और कमजोर पिछड़े देशों को वैचारिक गुलाम बना कर अपना शक्ति प्रदर्शन करते हुए मनमाने हित साध ना उनका सुनियोजित प्रयास है। कूटनीति द्वारा सरकारों और सरकारी एजेंसियों पर दबाव, मीडिया पर नियंत्रण, बाजार और पूंजी का गठजोड़ भूमंडलीकृत व्यवस्था का ही रूप है। इसमें विश्व के प्रभुत्वशाली देश और पूंजीपति आइकॉन खासी रुचि रखते हैं। बड़ी मीडिया कंपनियाँ जिनका साम्राज्य लगभग सभी देशों में व्याप्त है सुनियोजित तरीके से अपने विचारों का प्रचार प्रसार करतीं हैं, संस्कृति का दोहन करती हैं और जनसमाज को एक निष्क्रिय उपभोक्ता बनाने का जम कर प्रयास किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय नीतियाँ, कारपोरेट मीडिया घरानो के हित उनका दर्शन राजनीति और संस्कृति पर प्रभुत्व स्थापित करते हुए परोक्ष रूप में क्रियाशील रहता है। उनका कारपोरेट पब्लिक रिलेशन्स तंत्र ताकतवर ढंग से राजनीति और अर्थव्यवस्था का संचालन करता है राडिया टेप प्रकरण इसका स्पष्ट प्रमाण है।

मीडिया का राष्ट्रवाद क्या हो सकता है? एक जागरूक प्रहरी के रूप में कार्य करने को संकल्पबद्ध, लोकतन्त्र का चतुर्थ स्तम्भ जिसने स्वतन्त्रता आंदोलन मे मुख्य भूमिका निभाई हो भला आज राष्ट्रवादी चेतना प्रदर्शित करने में संकीर्ण विचारधारा का पोषक कैसे हो सकता है? विश्वास करना मुश्किल हो सकता है पर वास्तव में भारतीय मीडिया का सच कुछ ऐसा ही है। भारत की एकता अखंडता संप्रभुता का पक्षधर होते हुए भारतीय मीडिया को देश, समाज संस्कृति के परिप्रेक्ष्य मे व्यवहार कुशल बनने की अपेक्षा की जाने लगी है। भारत का सामाजिक ढांचा जटिल है विभिन्न वर्गों जातियों समूहों समुदायों के साथ साझी सोच और समझदारी का निर्वहन करते हुए मीडिया आधुनिक भारतीय समाज की संकल्पना को मूर्त रूप प्रदान कर सकता है। भारतीय सामाजिक ढांचे के अनुरूप आर्थिक वैषम्य, वर्गभेद, हाशिये के समाज के प्रति चिंताएँ व्यक्त करके जनमत को लहर पैदा करना उसके लिए अपेक्षित है। सामाजिक विकास और जनसरोकार के मुद्दों की अवहेलना कर मुख्यधारा का मीडिया खबरें बनाने और प्रसारित करने में विशेष वर्ग, जाति एवं किसी विशेष दृष्टिकोण के प्रति झुकाव रखता है जिसके बारे में पाठक

Coordinator
Aditi Mahavidyala
Bawana, Delhi-110039